आप में से किसी के मन में आता होगा कि ये मन ही मन सोचने से क्या होना है? संसार में जो व्यक्ति मन ही से सोचता है कुछ क्रिया नही करता उसको लोग कहते है कि ये मनमोदक खाता है। कोई केवल मन से सोचेगा तो क्या उसका पेट भरेगा?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

संसार की कोई वस्तु या व्यक्ति आपके मन की बात नही जान सकता इसीलिए आपके केवल सोचने से कोई प्रतिसाद नही मिलता। संसार में किसी के व्यवहार से लोग उसके मन का अंदाजा लगाते है और कई बार धोखा खाते है। लेकिन भगवान सब जगह एवं मन में भी एकसमान रूप से व्याप्त है। ऐसा नही है कि वैष्णोदेवी, तिरूपती, काशी, वृंदावन, मक्का मदीना आदि जगह पर कोई स्पेशल भगवान है और आपके घर व्याप्त कोई साधारण भगवान है। भगवान सब जगह एक सा रहता है। इसलिए आप कही भी रहकर भगवान का स्मरण करोगे तो भगवान जान जाता है। और सोचने का वही फल देता है जो वास्तव में क्रिया करने से मिलता है।

एक बहुत गरीब आदमी था। उसको भगवान की सेवा करने की बडी इच्छा थी। लेकिन सामान लाने के लिए पैसा नही था। उसने एक बार एक बाबाजी का प्रवचन सुना जो बता रहे थे, "अरे! भगवान तो केवल मन देखते है इसलिए मन से की गयी सेवा या मानसी सेवा ही सर्वश्रेष्ठ है। वो बाहरी क्रिया देखते ही नही है। बाहरी क्रिया करते हुए भगवान का ध्यान जरूरी है लेकिन भगवान का ध्यान यदि आप कर रहे हो तो बाहरी क्रिया की जरूरत नही है। क्रिया की तो ठीक नही की तो ठीक।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

ये सुनकर वो बडा खुष हुआ। अब उसने हररोज मन से सोचना शुरू किया कि कीमती हीरों से जड़ी सोने की थाली है, उसमें सोने की कटोरी है, उसमें बढ़िया पकवान परोसे है और भगवान जी उसको खा रहे है। ऐसा क्रम कई दिन चला। एक दिन वो सोच रहा था कि कटोरी में बढ़िया खीर है। लेकिन थाली नीचे से गरम लग रही है। लगता है खीर जादा गरम है। तो देखना चाहिए और उसने अपनी उंगली कटोरी में डाली तो उंगली जल गयी। गौर फर्माइए ये सब मन का सोचना है। अरे! ये क्या मैंने तो भगवान के खाने में उंगली डाल दी। चलो, दुबारा से खीर बनाते है। फिर उसका ध्यान एकदम टूट गया। लिंक खंडित हो गयी।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

अब वो वास्तविक दुनिया में आ गया। उसने अपनी उंगली की ओर देखा। वो वास्तव में जली हुई थी। भगवान ने लक्ष्मी से कहा, आओ तुमको एक भक्त दिखाते है। उस गरीब आदमी को बुलाकर भगवान ने लक्ष्मी से कहा, पूछो इसकी उंगली कैसे जली है! उस आदमी को भगवान के दर्शन भी हो गये।

इसलिए ये हमेशा याद रखना चाहिए कि भगवान के क्षेत्र में मन से सोचना ही सबकुछ है। मन ही बंधन एवं मोक्ष का कारण है। बाहरी क्रिया अपेक्षित नही है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132